दृष्टि के कारण ही लगता है। सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र आदि वास्तव में नहीं ढकते। ऐसे ही, माया भी श्रीकृष्ण को आवृत नहीं कर सकती। अपनी अंतरंगा शक्ति के द्वारा वे स्वेच्छा से अल्पज्ञों के सामने नहीं प्रकट होते। जैसा अध्याय के तीसरे श्लोक में कहा है, करोड़ों मनुष्यों में से कोई एक दुर्लभ व्यक्ति मानव देह की संसिद्धि के लिए प्रयास करता है और ऐसे हजारों सिद्धों में भी कोई एक ही भगवान् श्रीकृष्ण को तत्त्व से जानता है। जिसे निर्विशेष ब्रह्म अथवा एकदेशीय परमात्मा की पूर्ण अनुभूति हो गई हो, वह भी कृष्णभावनाभावित हुए बिना भगवान् श्रीकृष्ण के तत्त्व को नहीं जान सकता।

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत।
सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप।।२७।।

इच्छा=मनोरथ; **द्वेष**=घृणा (से); **समुत्थेन**=उत्पन्न हुए; **द्वन्द्व**=द्वन्द्व रूप; **मोहेन**=मोह से; **भारत**=हे भरतश्रेष्ठ; **सर्व**=सम्पूर्ण; **भूतानि**=जीव; **संमोहम्**=मोह को; **सर्गे**=सृष्टि में; **यान्ति**=प्राप्त हो रहे हैं; **परंतप**=हे शत्रुविजयी अर्जुन।

अनुवाद

हे भरतवंशी अर्जुन! इच्छा-द्वेष से उत्पन्न सुख-दुःख आदि द्वन्द्वों के कारण सब जीव संसार में मोह को प्राप्त हो रहे हैं।।२७।।

तात्पर्य

जीव का सच्चा स्वरूप यह है कि वह भगवान् का नित्यदास है। यही शुद्ध ज्ञान है। जब मोहवश जीव इस शुद्ध ज्ञान को भुला बैठता है तो माया के नियन्त्रण में आ जाता है और फिर श्रीभगवान् के तत्त्व को नहीं जान सकता। माया की अभिव्यक्ति इच्छा-द्वेष आदि द्वन्द्वों के रूप में है। इच्छा-द्वेष के कारण ही अज्ञानी मनुष्य परमेश्वर से एक हो जाना चाहता है और भगवान् कृष्ण से द्वेष कर बैठता है। इन इच्छा द्वेष आदि विकारों से मोहित न होने वाले शुद्धभक्त जानते हैं कि भगवान् श्रीकृष्ण अपनी अन्तरंगा शक्ति के द्वारा अवतरित होते हैं, पर द्वन्द्वों एवं अविद्या से मोहित मूढ़ समझते हैं कि श्रीभगवान् प्राकृत शक्तियों के कार्य हैं। यह उनका परम दुर्भाग्य है। ऐसे मोहित जीव मानो मान-अपमान, सुख-दुःख, स्त्री-पुरुष, शुभ-अशुभ, हर्ष-विषाद आदि द्वन्द्वों में ही स्थित रहते हैं। वे सोचा करते हैं कि, 'यह मेरी स्त्री है, यह मेरा घर है, मैं इस घर और स्त्री का स्वामी हूँ।' ये सब मोहकारी द्वन्द्व हैं। जो इस प्रकार के द्वन्द्वों से भ्रमित हैं, वे परम मूर्ख हैं और इसलिए श्रीभगवान् को नहीं जान सकते।

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः।।२८।।

येषाम्=जिन; **तु**=परन्तु; **अन्तगतम्**=पूर्ण नष्ट हो गया है; **पापम्**=पापकर्म; **जनानाम्**=मनुष्यों का; **पुण्य**=पवित्र; **कर्मणाम्**=कर्म करने वाले; **ते**=वे; **द्वन्द्व**=इच्छा-